Cambridge International A Level

Cambridge International Examinations
Cambridge International Advanced Level

HINDI **9687/02**

Paper 2 Reading and Writing **October/November 2015**

INSERT

1 hour 45 minutes

0385754726-I

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

This Insert contains the reading passages for use with the Question Paper.

You may annotate this Insert and use the blank spaces for planning.

The Insert is **not** assessed by the Examiner.

नीचे दिये गये निर्देशों को पढ़िए

संलग्न पत्र में दिये गये आलेखों का प्रश्नपत्र के साथ प्रयोग करें।

आप इस संलग्न पत्र की टिप्पणी बना सकते हैं और इसके खाली स्थानों को अपने काम की कच्ची रूपरेखा बनाने के लिये प्रयोग कर सकते हैं।
परीक्षक इस संलग्न पत्र का मूल्यांकन नहीं करेंगे।

This document consists of **3** printed pages and **1** blank page.

DC (ST/SW) 103912/3
© UCLES 2015

CAMBRIDGE International Examinations

धारा 1

पाठ 1 पढ़ें और प्रश्न पत्र पर प्रश्न 1, 2 और 3 का जवाब।

पाठ 1

पर्यटन का विकास

रमणीय स्थलों की ओर चमचमाते वाहनों में आते रंग-बिरंगे सैलानी, आवभगत में आंखे बिछाये अपने अतिथि के सत्कार के लिए पारंपरिक वस्त्र पहने आदर से खड़े द्वारपाल, ऐतिहासिक स्थिरता तथा सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक हैं। पर्यटक का प्रथम उद्देश्य निजी आमोद-प्रमोद के लिए नये स्थानों की ख़ोज और उनमें घूम-फिरकर अपने एकरस जीवन में रोमांच व उत्तेजना उत्पन्न करना होता है। ऐसे लोग चाहे देश के किसी दूसरे प्रान्त से आये हों या विदेशों से, प्रायः वे ऐतिहासिक, धार्मिक व प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण स्थानों तथा अपने से भिन्न संस्कृति, लोकजीवन, खानपान, जंगली वनस्पति और जीव-जन्तुओं को अपनी आंखों से देखने के लिए उत्सुक होते हैं।

इस माँग की पूर्ति के लिए सम्पूर्ण संसार में पर्यटन को लाभदायक उद्योग माना जाता है। यह न केवल अनेक लोगों को, विशेषतः स्थानीय वासियों को, रोज़गार देता है अपितु उनके जीवनस्तर को उन्नत करने व सुविधायें प्रदान करने में भी सहायक होता है। सुदूर क्षेत्रों में बने हुए प्राचीन किले, हवेलियाँ और महल जो देखरेख के अभाव में खंडहर होते जा रहे थे, वे अब अतिथि-भवनों अथवा भोजनालयों में परिवर्तित होकर उपार्जन का अनिवार्य स्रोत बन रहे हैं।

इस परिवर्तन का मुख्य कारण यह है कि पर्यटन इस बात की प्रतीक्षा नहीं करता कि कोई सरकार या बाहरी संस्था पहले आगे बढ़कर उसके लिए मौलिक योजना बनाए ताकि किसी स्थान पर पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके। इसकी अपेक्षा यह अर्थात पर्यटन चुने हुए क्षेत्रों की आवश्यकताओं से प्रेरित हो कर अपना आधारभूत ढांचा भी स्वयं विकसित करना प्रारम्भ कर लेता है। अनुभव बताता है कि ऐसे बहुत से स्थान हैं जहाँ पर्यटक पहले पहुँचे और आरामदायक सुविधायें बाद में धीरे-धीरे जुटती चली गयी। ऐसी सुविधायें जुटाना, स्वयं जुटाने वाले के लिए भी, लाभ का सौदा बन जाती हैं।

उन भागों में जहाँ बिजली केवल बादलों के मध्य ही चमकती थी और पानी आसमान से टपकता था, अब वहाँ बिजली के खंभे लग गये हैं और पानी की नालियाँ भी बिछ गयी हैं। उपग्रह-प्रणाली के द्वारा इन स्थानों पर दूर-संचार की सुविधाओं की उपलब्धि भी हो गयी है। परिवहन के क्षेत्र में आयी नयी क्रांति ने लोकप्रिय स्थानों को आवागमन के साधनों से जोड़ दिया है। और रही–सही कसर जनसंचार के नये माध्यमों, कम्प्यूटर के विस्तार तथा सूचना-उपकरणों ने पूरी कर दी है।

धारा 2

अब पाठ 2 पढ़ो और प्रश्न पत्र पर प्रश्न 4 और 5 का जवाब।

पाठ 2

मानव की अमानवता

आखिर मनुष्य पशुओं के साथ इतनी निर्दयता का व्यवहार क्यों करता है? क्या इसलिए करता है क्योंकि वह पशुओं को अपनी सम्पत्ति समझता है? एक ओर इंसानों को तड़पाना या हत्या करने को प्रत्येक सभ्य मनुष्य अपराध समझता है वहाँ दूसरी ओर पशुओं के साथ क्रूरता होते देखकर वही मनुष्य केवल मुँह मोड़कर चला जाता है। यदि ये बेज़ुबान जानवर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आवाज़ उठाते हैं या अपने बचाव के लिए लड़ते हैं तो उन्हें ही मनुष्य का अत्याचार सहना पड़ता है।

मनुष्य जानवरों पर विभिन्न परीक्षण करके अपने स्वास्थ्य और सौन्दर्य-लाभ के लिए औषधियों एवं प्रसाधनों का निर्माण करते हैं। अपने मनोरंजन व गृह-सज्जा के लिए उनका शिकार करके उनकी खाल और दाँतों से अनेकानेक सजावट की वस्तुएँ बनाते हैं। यह सब कुछ जानवरों के हित में नहीं है। इसकी सूची इतनी लम्बी व दुःखदायी है कि कुछ अन्य देशों की भांति भारतवर्ष में भी सन् उन्नीस सौ बासठ में पशु-क्रूरता-निवारण के अधिनियम (विभाग ग्यारह-बारह के अनुसार) पशु-क्रूरता को अवैध माना जाने लगा। परन्तु इस कानून को लागू करने के लिए एक और कानून बनाने की आवश्यकता है।

ऐसे कितने ही पशु-पक्षी हैं जो अब केवल चित्रों या पुस्तकों के पृष्ठों पर ही दिखाई देते हैं। उनके विलुप्त होने के पीछे प्राकृतिक कारण तो हैं ही परन्तु मनुष्य की लोलुपता, प्रदूषण, जनसंख्या की वृद्धि, प्रगति के नाम पर वनों का काटा जाना और अपने मनोरंजन के लिये पशुओं के प्रति क्रूरता भी उत्तरदायी है।

यह सत्य है कि सम्पूर्ण विश्व में बाघों की घटती संख्या के प्रति जन-चेतना जागृत की जा रही है। आंकड़ों के अनुसार सम्पूर्ण विश्व में केवल लगभग दो हज़ार बाघ बचे हैं। यदि शिकारियों की अधिकृत या अनधिकृत कार्यविधियों का क्रम इसी प्रकार चलता रहा तो निकट भविष्य में बाघ धरती से लुप्त हो जायेंगे। इतना ही नहीं सफ़ेद-शार्कों के लुप्त हो जाने का भय बाघ से भी अधिक है। आस्ट्रेलिया के समुद्री क्षेत्रों में सफ़ेद-शार्कों पर प्रेषकयंत्र और समुद्रतटों पर प्रापकयंत्र लगाये जा रहे हैं जिससे उनके किनारों के समीप आने की सूचना प्राप्त हो सके। कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार ये यंत्र पानी में थिरकन उत्पन्न करते हैं जो समुद्री जीव-जंतुओं की श्रवण-शक्ति पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

© UCLES 2015

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Examinations Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cie.org.uk after the live examination series.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.

© UCLES 2015